प्राकृत ग्रन्थमाला – 23

पालि-प्राकृत साहित्य के व्यावहारिक पक्ष एवं वर्तमान में उनकी उपयोगिता

Rational Approach & Relevance of Pali-Prakrit Literature in Modern Era

प्रधानसम्पादक
प्रो. अर्कनाथ चौधरी

सम्पादक
प्रो. श्रीयांशकुमारसिंघई
डॉ. धर्मेन्द्रजैन
डॉ. जयवन्त खण्डारे

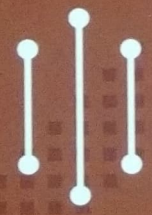

राष्ट्रिय संस्कृत संस्थान (मानितविश्वविद्यालय)
जयपुर परिसर, जयपुर

ISBN : 978-81-926664-8-8

संरक्षक :
प्रो. परमेश्वरनारायण शास्त्री
कुलपति

संपादकमण्डल :
प्रो. श्रीयांश कुमार सिंघई
प्रो. रामकुमार शर्मा
प्रो. कमलेश कुमार जैन
डॉ. आनंद कुमार जैन
डॉ. प्रभातदास
डॉ. सतेन्द्र कुमार जैन
डॉ. अमित कुमार
डॉ. दर्शना जैन

© प्रकाशकाधीन

मूल्य : 500 रुपये

संस्करण : प्रथम, 2019

प्रतियाँ : 300

टंकक एवं मुद्रण :
एम.वी. प्रिन्टर एण्ड जनरल सप्लायर,
जयपुर

प्रकाशक :
प्राचार्य
राष्ट्रिय संस्कृत संस्थान
(मानितविश्वविद्यालय)
जयपुर परिसर, त्रिवेणी नगर, जयपुर
दूरभाष : 2761115 (का.)
फैक्स : 0141-2760686
ईमेल : principaljp.in@gmail.com
वेबसाइट : www.rsksjaipur.ac.in

Petron :
Prof. Parmeshwar Narayan Shastri
Vice-Chancellor

Editorial Board :
Prof. Shriyansh Kumar Singhai
Prof. Ram Kumar Sharma
Prof. Kamlesh Kumar Jain
Dr. Anand Kumar Jain
Dr. Prabhat Das
Dr. Satendra Kumar Jain
Dr. Amit Kumar
Dr. Darshana Jain

© Under the Publisher

Price : 500/-

Edition : First, 2019

Copies : 300

Type Setting & Printer :
M.V. Printer & General Supplier
Jaipur

Publisher :
Principal
Rashtriya Sanskrit Sansthan
(Deemed University)
Jaipur Campus, Triveni Nagar,
Jaipur-302018
Phone : 0141-276115
Fax : 0141-2760686
Email : principaljp.in@gmail.com
Website : www.rsksjaipur.ac.in

❋ अनुक्रमणिका ❋

1. पालि एवं प्राकृत साहित्य के व्यावहारिक पक्ष एवं वर्तमान में उनकी उपयोगिता (मुख्य सम्बोधनं-Keynote Address)	प्रो. सत्यप्रकाश शर्मा	1
प्राकृतभाग:		
2. सौरसेनी प्राकृत साहित्य में अध्यात्म निरूपण का व्यावहारिक पक्ष	प्रो. श्रीयांश कुमार सिंघई	7
3. कुवलयमालाकहा की लोकधर्मिता और प्रासंगिकता	प्रो. प्रेम सुमन जैन	20
4. प्राकृत उपांग साहित्य में निहित व्यावहारिक पक्षों की प्रासंगिकता	डॉ. ऋषभ चन्द्र जैन 'फौजदार'	30
5. प्राकृत अलंकारों में लोकधर्मिता की आधुनिक काल में उपयोगिता	प्रो. कमलेश कुमार जैन	44
6. The Yoga tradition as reflected in the Prakrit texts and Commentaries with special reference to meditation based on the Dhyānaśataka of Āvaśyaka Niryukti	Jagat Ram Bhattacharyya	51
7. आधुनिक युग में प्राकृत भाषा के विकास की संभावनाएं	प्रो अनेकांत कुमार जैन	60
8. प्राकृतभाषा एवं साहित्य के व्यावहारिक-पक्ष	प्रो. सुदीप कुमार जैन	65
9. गउडवहो महाकाव्य की लोकधर्मिता की प्रासंगिकता	प्रो. डॉ. दीनानाथ शर्मा	72
10. अपभ्रंश कथाकाव्यों के व्यावहारिक पक्षों की वर्तमान में उपयोगिता	प्रो. सलोनी जोशी	77
11. प्राकृत साहित्य में लोकोक्तियाँ और उनका प्रचलन	प्रो. कमलेशकुमार जैन	81
12. वसुदेवहिण्डी प्राकृत कथासाहित्य में अंकित वास्तुविज्ञान की वर्तमान में प्रासंगिकता	प्रो.जयकुमार उपाध्ये	89
13. प्राचीन प्राकृत साहित्य में वाचिक व्यवहार के सूत्र	प्रो. दामोदर शास्त्री	98
14. प्राकृत शिलालेखों में निहित व्यावहारिक पक्षों की वर्तमान में प्रासंगिकता	डॉ. महावीर प्रभाचंद्र शास्त्री	105
15. उवासकदसाओ में वर्णित अनर्थदण्ड विरमण व्रत की वर्तमान परिप्रेक्ष्य में उपयोगिता	डॉ. समणी संगीत प्रज्ञा	113
16. दशवैकालिक आगम में समय-प्रबंधन के सूत्र	डॉ. समणी भास्कर प्रज्ञा	122
17. उत्तराध्ययनसूत्र में निहित व्यावहारिक पक्षों की प्रासंगिकता	डॉ. सुमत कुमार जैन	128
18. शौरसेनी प्राकृत साहित्य में दार्शनिक तथ्यों की प्रासंगिकता	डॉ. अनिल कुमार जैन	137
19. प्राकृत मुक्तकों के व्यावहारिक पक्षों की वर्तमान में प्रासंगिकता	डॉ. रजनीश शुक्ल	150
20. दंसणकहरयणकरंडु की प्रासंगिकता	डॉ. धर्मेन्द्र कुमार जैन	160
21. प्राकृत साहित्य में वर्णित पारिवारिक संबंधों की उपादेयता (प्राकृत कथा-ग्रंथों के संदर्भ में)	डॉ. तारा डागा	168

22. शौरसैनी प्राकृत श्रावकाचारों में प्रयुक्त व्यावहारिक पक्षों की प्रासंगिकता	डॉ. ज्योतिबाबू जैन	177
23. धर्मोपदेशमालाविवरण में निहित राजीमतीचरित्र की प्रासंगिकता	रेखा जैन	188
24. मागधी प्राकृत में निहित व्यावहारिक पक्षों की वर्तमान में उपादेयता	डॉ. सुदर्शन मिश्र	191
25. प्राकृत दसभत्ति संगहों का व्यवहारिक पक्ष	डॉ. मनीषा जैन	201
26. संस्कृत काव्यशास्त्रों में प्राकृत गाथाओं की प्रासंगिकता	डॉ. राकेश कुमार जैन	210
27. वसुदेवहिण्डी में निहित व्यावहारिक पक्षों की प्रासंगिकता	डॉ. आनन्द कुमार जैन	222
28. जम्बुचरियं के लोककल्याण तत्त्व की साम्प्रतिक उपयोगिता	डॉ. अमित कुमार	227
29. गाहासत्तसई की लोकधर्मिता -एक प्रासङ्गिक निरूपण	डॉ. बलराम शुक्ल	231
30. पउमचरिये साम्प्रतिके च सन्दर्भे युद्धं परिणामश्च	डॉ. प्रभात कुमार दास	241
31. प्राकृत कोश साहित्य का व्यावहारिक पक्ष	डॉ. पत्रिका जैन	250
32. प्राकृत साहित्य में वर्णित वैवाहिक जीवन की प्रासंगिकता	डॉ. सतेन्द्र कुमार जैन	255
33. प्राकृत कथा साहित्य में वर्णित जीवनशैली एवं सामाजिक प्रभाव	डॉ. दर्शना जैन	265
34. तीसरी से दसवीं शताब्दी के प्राकृत चरित ग्रन्थों की वर्तमान में उपादेयता	प्रो. कल्पना जैन	272

पालिविभाग:

35. पालि भाषा और साहित्य की उपयोगिता	प्रो. संघसेन सिंह	284
36. पालि साहित्य में वर्णित राजनैतिक सन्दर्भों की उपयोगिता	प्रो. विजय कुमार जैन	289
37. पालि अट्ठकथाओं की उपयोगिता	प्रो. धर्मचन्द्र जैन	299
38. पालि साहित्य के संस्कृत छायानुवाद की व्यावहारिक उपादेयता	प्रो. उमाशंकर व्यास	305
39. पालि सूक्तियों की सामाजिक उपयोगिता	डॉ. राका जैन	310
40. सतिपट्ठान सुत्त की वर्तमान में प्रासंगिकता	प्रो. बालचंद्र खांडेकर	318
41. केसमुत्तिसुत्त-कालाम सुत्त की वर्तमान में उपयोगिता	डॉ. मालती साखरे	324
42. पालि साहित्य में निहित राजनैतिक अवधारणा की आधुनिक समय में उपयोगिता	डॉ प्रियसेन सिंह	328
43. थेरीगाथापालि का व्यवहारिक पक्ष एवं वर्तमान में उसकी उपयोगिता	डॉ. नीलिमा चौहान	334
44. वंश साहित्य का व्यावहारिक पक्ष एवं वर्तमान में उसकी उपयोगिता	डॉ. सोनल सिंह	339
45. मैत्री ब्रह्मविहार का व्यावहारिक पक्ष एवं वर्तमान में उनकी उपयोगिता	डा. जगमोहन	347
46. चूळवंश की व्यावहारिकता तथा उपयोगिता	डॉ. मोहन मिश्र	350
47. सुत्तपिटक में आगत सांस्कृतिक पक्षों की उपादेयता	डॉ. जयवंत खंडारे	355
48. पालि त्रिपिटक में वर्णित बुद्ध की जीवनचर्या की प्रासंगिकता	डॉ. अतुल कुमार श्रीवास्तव	359
49. संयुत्तनिकायपालि का व्यावहारिक पक्ष एवं वर्तमान में उसकी उपयोगिता	डॉ. वेदव्यास पाण्डेय	367
50. अपदान का व्यावहारिक पक्ष एवं वर्तमान में उसकी उपयोगिता	डॉ. प्रियंका	373
51. आधुनिक सन्दर्भ में पालि सुत्तपिटक में प्राप्त बुद्ध के उपदेशों की उपयोगिता	डॉ. घनश्याम पाल	380
52. सुबोधालंकार का पालि साहित्य के विकास में योगदान	डॉ. सुस्मिता व्यास	385

शौरसैनी प्राकृत श्रावकाचारों में प्रयुक्त व्यावहारिक पक्षों की प्रासंगिकता

डॉ. ज्योतिबाबू जैन, उदयपुर

भारत वर्ष की प्राचीन जनभाषाओं में शौरसैनी प्राकृत भाषा का अनन्यतम स्थान है, जो सिद्धान्त और आचार ग्रंथों के साथ काव्यों की भाषा रही है। प्राचीन शिलालेखों एवं पुराकालीन नाटकों में इसका पर्याप्त प्रयोग हुआ है। शौरसेनी भाषा का महावीर स्वामी की परम्परा के श्रेष्ठतम आचार्यों ने सर्वाधिक प्रयोग किया है और महावीर के समय से लेकर अबतक हो रहा है। इस भाषा के कतिपय ग्रंथ– षट्खंडागम, समयसार, मूलाचार, कार्तिकेयानुप्रेक्षा, द्रव्यसंग्रह, वसुनंदि– श्रावकाचार आदि हैं।

इन ग्रन्थों में साधकों को दो श्रेणियों में विभाजित किया है। एक पूर्ण आरम्भ और परिग्रह के त्यागी, वे श्रमण होते हैं और दूसरे जो परिवार के साथ घर पर रहकर साधना करते हैं, वे गृहस्थ या श्रावक कहलाते हैं। उनकी प्रवृत्ति किस प्रकार हो, इस सम्बन्ध में आचार्य कुंदकुंद के मूलाचार ग्रन्थ और दशवैकालिक सूत्र में कहा है कि यति अपने आचार-विचार को किस प्रकार अभिव्यक्त करें?

कधं चरे कधं चिट्ठे कधमासे कधं सये

कधं भुंजेज्ज भासेज्ज जदो पावं ण बज्झदि॥[1]

अर्थात् हम लोग कैसे चले, कैसे उठे, कैसे बैठे, कैसे सोये, कैसे आहार करे, कैसे बोले जिससे पाप कर्मों का बन्ध न हो, इसी के उत्तर में कहा है–

जदं चरे जदं चिट्ठे जदमासे जदं सये।

जदं भुंजेज्ज भासेज्ज एवं पावं ण बज्झदि

अर्थात् सावधानी पूर्वक चलें, सावधानी पूर्वक उठें, सावधानी पूर्वक बैठें, सावधानी पूर्वक सोयें, सावधानी पूर्वक भोजन करें, सावधानी पूर्वक बोलें, जिससे पाप का बंध न हो।

अर्थात् स्पष्ट है कि यदि हमारा सावधानीपूर्वक और अहिंसामय आचरण है तो जीवन में अप्रिय घटनाओं से बचा जा सकता है। यदि हम सावधानीपूर्वक प्रवृत्ति नहीं करते हैं तो हिंसा नहीं होने पर भी हम हिंसा के भागीदार होते हैं। प्रवचनसार के अनुसार –

जीवदु व मरदु व, अयदाचारस्स णिच्छिदा हिंसा।

पयदस्स णत्थि बंधो, हिंसा मेत्तेण समिदस्स।।[2]

श्रावकाचार के प्रतिपादक उपासकदशांग, श्रावक प्रतिक्रमण सूत्र आदि आगमों के अतिरिक्त शौरसेनी प्राकृत में रचित चरित्र प्रधान ग्रंथों की एक लम्बी श्रृँखला है, जिसमें ईसा की प्रथम शताब्दी के महान् आचार्य कुन्दकुन्द का चरित्रपाहुड एवं रयणसार, इसके अनंतर स्वामी कार्तिकेय का कार्तिकेयानुप्रेक्षा, आचार्य देवसेन कृत भावसंग्रह, आराधनासार एवं आचार्य वसुनंदी कृत वसुनंदी श्रावकाचार प्रमुख हैं।

उक्त ग्रंथों का अवलोकन करके मैंने अपने आलेख का मुख्य आधार वसुनंदी कृत श्रावकाचार को बनाया है क्योंकि श्रावकाचारों की श्रृंखला में शौरसेनी प्राकृत भाषा में रचित इस श्रावकाचार का विशिष्ट स्थान है। आचार्य कुन्दकुन्द, स्वामी कार्तिकेय की परम्परा का अनुकरण कर आचार्य वसुनंदी ने भी प्रतिमाओं के आधार पर अपने ग्रंथ में श्रावकाचार का वर्णन किया है। अन्य आचार्यों द्वारा प्रणीत ग्रंथों में प्रतिमाओं के अतिरिक्त बारह व्रत, सल्लेखना, पक्ष, चर्या और साधन का वर्णन उपलब्ध होता है। इस परम्परा में आचार्य उमास्वामी और आचार्य समन्तभद्र प्रमुख है। इन दोनों के प्रतिपादन में भिन्नता होने पर भी सभ्यता के मूलस्वरूप में कोई विशेष अंतर नहीं है।

श्रावक का व्यवहार और सामाजिक समरसता–

श्रावकाचार श्रावकों की आचार-संहिता है। यह आज उतने ही प्रासंगिक हैं, जितने की रचनाकाल में थे। श्रावकाचार श्रावक के आचरण का वह संविधान है, जिसके आधार पर गृहस्थ अपने जीवन का उत्थान करते हैं। यह बहुत व्यावहारिक है। इनमें जो समाधान सुझाये गए हैं, उनसे नागरिकों के अधिकारों और कर्तव्यबोध के साथ वर्तमान की अनेक समस्याओं के समाधान भी निहित हैं।

श्रावकाचार के पालन के लिए श्रेष्ठ जाति में जन्म लेने की आवश्यकता नहीं अपितु श्रेष्ठ कर्म की आवश्यकता है। श्रावक धर्म में ऊँच-नीच का भेद नहीं है। उच्च कुल में उत्पन्न होने मात्र से व्यक्ति को श्रेष्ठ नहीं कहा जा सकता, वह श्रेष्ठ तब ही होगा जबकि उसका आचरण श्रेष्ठ हो इसलिए महावीर ने कहा है कि व्यक्ति जन्म से नहीं कर्म से महान